Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

लोक संगीत एवं रस

ALOK KUMAR

Research Scholar, Department of Music, CSJMU Kanpur U.P.

सारांश

लोक संगीत आम जन मानस का संगीत है, इसको गाने के लिए किसी विशेष योग्यता व नियम का पालन नहीं करना पड़ता है क्योंकि इसके गाने के चलन बहुत ही सहज व सरल होते हैं जिससे इसे बूढ़े-बच्चे जवान एवं अनपढ़ स्त्री व पुरूष भी बहुत ही आसानी से सीखकर गा सकते हैं। यह एक ऐसी संगीत विधा है जो हर क्षेत्र व प्रत्येक वर्ग में उस क्षेत्र के रहन-सहन व भाषा के अनुसार गाया-बजाया जाता है, इसलिए लोक संगीत एक विशेष क्षेत्र के लोगों का गीत है एवं इसके गाने व बजाने का 'आनन्द' उसी क्षेत्र के लोग ले सकते हैं। यही 'आनन्द' शब्द रस का मूर्त रूप है। वैसे तो रस के कई मतलब होते हैं किन्तु हमें यहाँ सिर्फ लोक संगीत से उत्पन्न रस (आनन्द) से ही सरोकार करना है। लोक संगीत में रस प्रदर्शित करने के लिए किसी प्रयत्न की आवश्यकता नहीं होती है बल्कि यह स्वयं परिलक्षित हो जाता है। लोक संगीत व लोक कलाएं इतने सहज व सरल होते हैं कि आम जनमानस इनमें से उत्पन्न रसोत्पत्ति को बड़े अच्छे ढंग से जानकर उसका लुत्फ उठाता है।

उद्देश्य: वर्तमान समय में लोक संगीत एवं रस के संबंध का अध्ययन करना

विधि: सर्वेक्षण विधि।

मुख्य शब्द: लोकसंगीत, रस, लोककलाएं, देशी संगीत।

परिचय

हमारा देश विभिन्न लोक-परम्पराओं को समेटे हुए विश्व में अलग पहचान बनाए हुए हैं। देश में भिन्न-भिन्न जाति, धर्म, समुदाय, भाषा एवं बोली के लोग निवास करते हैं एवं भौगोलिक रूप से भी विभिन्नता पायी जाती है। इन्हीं विभिन्नताओं के चलते हमारे देश में तरह-तरह की संस्कृति व सभ्यता देखने को मिलती है एवं लोक परम्पराएं भी भिन्न-भिन्न देखने को मिलती है।

लोक संगीत की परम्परा अति प्राचीनकाल से चली आ रही है। जब से मनुष्य सभ्यता की उत्पत्ति हुई है, तब से लेकर आज तक ऐसा कोई पर्व व त्योहार नहीं है जिस अवसर पर संगीत का प्रयोग न किया जाता हो। अर्थात् मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक संगीत का प्रभाव देखने को मिलता है।

श्रीमद्भगवदगीता में 'लोक' तथा 'संग्रह' आदि अनेक शब्दों का उल्लेख कई स्थानों पर किया गया है श्रीकृष्ण ने 'लोकसंग्रह' पर विशेष ज़ोर दिया है जिसका अर्थ सामान्य जनता का व्यवहार आचरण एवं आदर्श है।

लोक संग्रहमेवापि संपरयन् कर्तुमर्हसि

लोक संगीत में दो शब्द हैं 'लोक' एवं 'संगीत'। लोक संगीत शब्द का अर्थ हुआ 'लोक का संगीत'। यहां पर यह बताता चलूँ कि लोक के कई अर्थ होते हैं जैसे- (1) किसी देश या स्थान का समाज, (2) जनता या आवाम, (3) विश्व का एक विभाग, भुवन जैसे-पृथ्वी लोक, पाताल लोक (4) संसार या दुनिया। किन्तु हम यहां पर लोक का अर्थ सिर्फ ''जनता या लोगों'' से रखेंगे।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

डा. श्याम परमार के अनुसार-

'लोकगीत एवं लोकसंगीत एक ही रथ के दो पहिये हैं-एक की अनुपस्थिति में दूसरा अनुपयोगी हैं'।

लोक संगीत का सबसे सटीक अर्थ यही हो सकता है कि यह लोक या लोग जनमानस का संगीत है। लोगों द्वारा रचित, लोगों द्वारा रक्षित, लोक रंजन के लिए, लोगों द्वारा गाया जाने वाला संगीत ही लोक संगीत होता है। लोकसंगीत के बारे में यह कहा गया है कि मनुष्य नौ प्रकार के रसो से प्रभावित होकर जब स्वाभाविक रूप से गाकर, बजाकर, अथवा नाचकर अपने मनोभावों को प्रदर्शित या प्रकट करता है, तो उसे लोक संगीत कहते हैं।

''लोकगीत धरती के गीत हैं, ये जीवन के गीत हैं, ये विजय के गीत हैं, ये मंगल के गीत हैं। जनता के द्वारा रचे गये जनता के जीवन से सम्बद्ध रखने वाले ये गीत जनता की ही सम्पत्ति है।''

अध्ययन तथा कार्य

लोक संगीत ऐसी विधा है जो किसी विशेष क्षेत्र, समुदाय या लोगों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है जो उनके विशिष्ट संस्कृति व विविधता को दर्शाता है। लोक संगीत अक्सर ग्रामीण क्षेत्रों में गाया जाने वाला गीत है जो ग्रामीणों के लिए मनोरंजन का एक मात्र जरिया ही नहीं वरन् इन गीतों के माध्यम से ग्रामीण समाज का प्रतिबिम्ब भी सामने आ जाता है। भारत के लगभग प्रत्येक क्षेत्र का अपना लोक संगीत है जो स्थानीय संस्कृति तथा जीवन के तौर तरीकों को दिखाता है, क्योंकि इस संगीत से जुड़े लोगों का संक्षिप्त इतिहास भी प्रस्तुत करता है। इस गीत के माध्यम से युवा पीढ़ी अपने पूर्वजों के द्वारा संजोयी गयी महत्वपूर्ण जानकारियां एकत्रित करता है एवं यही जानकारी पीढ़ी-दर पीढ़ी पहुंचती रहती है। इन गीतों के माध्यम से समाज की उन परम्पराओं व सभ्यता के बारे में जानकारी मिलती है जो या तो भूली जा चुकी है या फिर समाप्त होने की कगार पर है।

लोक संगीत ही शास्त्रीय संगीत का आधार है या यूं कहे कि लोकसंगीत से ही शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति हुई है जो इसमें कुछ झूठ नहीं है। लोक संगीत जनमानस का गीत है जो दिन भर खेतों खलिहानों में काम करते हुए गुनगुनाता रहता है और शाम को जब घर लौटता है तो घर पर भी अपनी थकान मिटाने के लिए आसपास के लोगों के साथ लोक गीतों का आनन्द उठाता है चूंकि लोकसंगीत में किसी नियम का पालन नहीं करना पड़ता है, इसलिए बूढ़े-बच्चे जवान सभी जो भी मन में आया उसे इन गीतों के माध्यम से व्यक्त कर देते हैं। ग्रामीण अंचल की औरतें भी अपनी भावनाओं को इस गीत के माध्यम से व्यक्त करती रहती है जैसे-किसी स्त्री का पति उससे दूर कहीं परेदश में रह रहा होता है तो वह स्त्री अपनी पीड़ा या विरह को इन गीतों के द्वारा बड़े ही सहजता से प्रस्तुत कर देती है।

पं0 ओंकार नाथ ठाकुर के अनुसार- ''देशी संगीत के विकास की पृष्ठभूमि लोक संगीत है।''

गुरू रवीन्द्र नाथ टैगोर के अनुसार ''संस्कृति का सुखद संदेश तो ले जाने वाली कला है लोकसंगीत।''

पं0 जवाहर लाल नेहरू के अनुसार- ''लोक कला में हमको अपने उस सांस्कृतिक वैभव को देखने का अवसर मिलता है जिसने हमारे देश को एकता के सूत्र में बांधा है।''

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

संगीत द्वारा जिस आनन्द की अनुभूति हमें होती है, वही आनन्द 'रस' का मूर्त रूप है। रस कला का प्राण है एवं कला का उद्देश्य रसानुभूति यानि आत्मिक आनन्द प्राप्त करना है। एक ललित कला होने के नाते संगीत में तथा संगीत का एक प्रकार होने के नाते लोक संगीत में रस निश्चित रूप से विद्यमान है।

''लोकगीतों को उनमें प्राप्त सहजता, रसमयता, मधुरता आदि गुणों के लिए जाना जाता है, श्री राम नरेश त्रिपाठी के अनुसार-

ग्रामगीत प्रकृति के उद्गार हैं, इनमें अलंकार नही, केवल रस है। छन्द नहीं केवल लय है। लालित्य नहीं केवल माधुर्य है। ग्रामीण मनुष्यों के स्त्री पुरूषों के मध्य में हृदय नामक आसन पर बैठकर प्रकृति गान करती है। प्रकृति के वे ही गान ग्राम गीत है।''

रस

सर्वप्रथम 'रस' शब्द का प्रयोग किन-किन स्थानों पर किन-किन अर्थों में होता है, यह जानना जरूरी है। इसका सीधा सरल व सहज अर्थ है, किसी फल या फूल या सब्जी का निचोड़ा हुआ तरतलम् पदार्थ। जैसे-गन्ने का रस, पालक का रस, नींबू का रस, गुलाब का रस आदि। 'रस' का स्वाद के अर्थ में प्रयोग भी सामान्य व्यवहार में पाया जाता है। संगीत व साहित्य के क्षेत्र में 'रस' का अर्थ उपरोक्त रसार्थ से अलग होता है। जैसे किसी काव्य को पढ़ने या किसी गीत को सुनने से जो आनन्द हमें प्राप्त होता है उसे रस कहा जाता है।

रस का उद्भव और विकास स्पष्ट करते हुए भरत मुनि ने लिखा है कि श्रृंगार, रौद्र, वीर एवं वीभत्स रसों की ही उत्पत्ति सर्वप्रथम हुई उसके बाद श्रृंगार से हास्य, रौद्र से करूण, वीर रस से अद्भुत और वीभत्स रस से भयानक रस की उत्पत्ति हुई है। इस प्रकार भरत मुनि ने कुल आठ रसों का वर्णन 'नाट्य शास्त्र' में किया है। किन्तु अभिनव गुप्त ने एक और अन्य रस बताया। इस प्रकार रस शास्त्र के अन्तर्गत कुल नौ रस माने जाते हैं। नौ 'रस' तथा उनके स्थायी भाव इस प्रकार है -

	रस	**स्थायी भाव**
1.	श्रृंगार (भक्ति, वात्सल्य)	रति
2.	हास्य	हास
3.	करूण	शोक
4.	रौद्र	क्रोध
5.	वीर	उत्साह
6.	भयानक	भय
7.	वीभत्स	जुगुप्सा
8.	अद्भुत	विस्मय
9.	शान्त निर्वेद	(उदासीनता)

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

''लोकगीतों में करूण रस की मात्रा श्रृंगार रस से भी अधिक पाई जाती है। इस रस की अभिव्यक्ति इन गीतों में तीन अवसरों पर विशेष रूप से हुई है-

(1) विदाई

(2) वियोग

(3) वैधव्य

एक विदाई गीत का उदाहरण प्रस्तुत है-

बाबा के रोवले गंगा बढ़ि अइली, अम्मा के रोवले अनोर।

भइया के रोवले चरन धोती भीजे, भऊजी नयनवों ना लोर।।

लोक संगीत की उत्पत्ति बड़े सहज रूप से रस को अभिव्यक्त करते हुए हुई है। अतः इसमें रस का निरूपण अत्यन्त सहज व सरल रूप से पाया जाता है।

मुख्य रूप से लोक संगीत के छः प्रकार होते हैं-

1. संस्कार गीत - सोहर, खेलवना गीत, मुंडन गीत, विवाह गीत आदि।
2. ऋतु गीत - कजरी, बारहमासा, चैती, होली आदि।
3. धार्मिक गीत - छठी माता गीत, नव दुर्गा गीत, नागपंचमी गीत आदि।
4. जाति गीत - अहीरों, कहारों, गड़रियों, धोबियों आदि का गीत।
5 क्रिया गीत - सोहनी गीत, रोपनी गीत, जतसार गीत आदि।
6. विविध गीत - पूर्वी, निर्गुण, छपहरिया, मेला गीत, लोरी गीत, बिरहा, भरथरी, लोरिकायन, नौटंकी गीत, सारंग गीत आदि।

नौ रसों में से पांच रसों का प्रयोग लोक संगीत में प्रमुखता से किया जाता है एवं इसमें भी करूण रस की अधिकता पायी जाती है ये पांचो रस निम्न है:- (1) श्रृंगार रस (2) वीर रस (3) शान्त रस (4) करूण रस (5) हास्य रस

- श्रृगार रस के अन्तर्गत- पूर्वी, सोहर, झूमर, विवाह गीत आदि
- वीर रस के अन्तर्गत- आल्हा गीत, लोक देश-भक्ति गीत आदि
- शान्त रस के अन्तर्गत- परिक्रमा गीता, व्रत सम्बन्धी गीत, तुलसी गीत, गंगा गीत आदि
- करूण रस के अन्तर्गत - विदाई गीत, गवना गीता, रोपनी गीत, जतसार गीत आदि
- हास्य रस के अन्तर्गत - कोहबर गीत, ज्योनार के समय गारी के गीत।

उदाहरणार्थ -

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

1. कजरी गीत

''गोरी करके सिंगार चोली पहिरे बूंटीदार

जिया मारेली गोदनवा गोदाई के, नयनवा लड़ाय के ना।

बनल सूरत कटीली गोल, बोलस मीठ-मीठ बोल,

मोर फासेली मनवा मुस्काय के, नयनवा लड़ाय के ना।''

उपरोक्त कजरी गीत में कोई पुरूष किसी स्त्री की खूबसूरती का बखान कर रहा है जिसमें बिल्कुल स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि इस गीत में जो शब्द है वो आम लोगों की बातचीत में प्रायः देखे जाते हैं और इसमें श्रृंगार रस बिल्कुल स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

2- सोहर गीत

भारतीय लोक संस्कृति में सोहर का महत्वपूर्ण स्थान है। जब कोई स्त्री पुत्र को जन्म देती है तो उस शुभ अवसर पर सोहर गीत गाया जाता है जो वात्सल्य रस से ओत-प्रोत होता है। लोक गीतों में सोहर को 'मगल गीत' की भी संज्ञा दी गई है -

''गावहु ए सखि गावहु, गाई के सुनावहु हो।

सब सखि मिलि जुलि गावहु, आजु मंगलगीत हो।।''

3- चैती गीत

नइहर से केउ नाही अइले हो रामा, बितल फगुनवा

मइया मोरी होती त भइया के पठवती

भौजी के कटेला करेजवा हो रामा, बितल फगुनवा।। नइहर.....

उपरोक्त गीत में एक विवाहित स्त्री अपने मायके के बारे में सोचकर अपनी माँ को याद कर रही है, जो कि यहां वियोग श्रृंगार रस स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है।

लोक संगीत एक स्थानिक प्रादेशिक संगीत है। यह विभिन्न प्रदेशों के लोगों के रीति-रिवाजों के अनुसार गाया-बजाया जाता है। इसलिए उस संगीत विधा में उत्पन्न रसाभिव्यक्ति स्थानीय लोग तो अनुभव (महसूस) कर सकते हैं किन्तु कोई बाहरी व्यक्ति भी उसमें विद्यमान रस का आनन्द उठा सके ऐसा आवश्यक नहीं। लोक संगीत का स्वरूप ऐसा है कि जो व्यक्ति संगीत की शिक्षा कभी न प्राप्त किया हो वह भी इसे बड़े आसानी से गा-बजा सकता है एवं इसमें अभिव्यक्त रसों का आनन्द भी बखूबी उठा सकता है। लोकसंगीत व लोक कलाओं का रूप इतना सहज व सरल है कि यह आम जनमानस को बड़ी आसानी से समझ आ जाता है।

निष्कर्ष

लोक संगीत आम जन का संगीत है। इसमें संगीत की शास्त्रीयता का प्रयोग नहीं किया जाता है एवं न ही किसी विशेष नियम या पद्धति का पालन किया जाता है, जो भी मन में आता है उसको बड़े ही आसानी से लोक संगीत के माध्यम से आम व्यक्ति अपनी भावनाओं को व्यक्त कर देता है एवं उससे प्राप्त आनन्द से आत्मविभोर हो जाता है। चूंकि इन

लोकसंगीतों के माध्यम से आनन्द (रस) प्राप्त करने के लिए किसी विशेष योग्यता की आवश्यकता नहीं होती है अतः गांव के अनपढ़ स्त्री व पुरूष भी बखूबी इसका आनन्द ले सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

गर्ग, लक्ष्मी नारायण (2017). संगीत विशारद, संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश

उपाध्याय, डॉ रविशंकर (2006). भोजपुरी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, कला प्रकाशन, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

सिंह, डॉ संजय कुमार (2010). भोजपुरी लोक संस्कृति एवं हिंदुस्तानी संगीत, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली

शर्मा, प्रो. स्वतंत्र (2005). सौंदर्य रस एवं संगीत, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली

सिन्हा, डॉ ज्योति (2013). भोजपुरी लोकगीतों के विविध आयाम, ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली

उपाध्याय, कृष्णदेव (2009). लोक संस्कृति की रूपरेखा, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज

सुमन (2019). ऋतुकालीन लोकगीतों में शास्त्रीय संगीत के तत्त्व, उत्तर प्रदेश के सन्दर्भ में, नैतिक प्रकाशन, उत्तर प्रदेश